घर घर अष्टमी दी जोत जगी ए

घर घर अष्टमी दी जोत जगी ए ।
कंजका भवानी पूजा होंण लगी ए ॥

सज गए बाज़ार, सजीयां ने गलियां।
वस रहे रंग रस, फुल कलियां ॥
अमृत दी वर्षा होंण लगी ए -
कंजका भवानी...

घर घर कंजकां जयकार बोलया ।
माता दे प्यारेयां द्वार खोलया ॥
हर पासे दर्शनां दी होड़ लगी ए -
कंजका भवानी...

मथे ते तिलक, गलां विच अट्टे ने ।
पैरां 'च' पायल, सिरां ते दुपट्टे ने ॥
बांही चूड़ा हथां उत्ते मैंहदी लगी ए -
कंजका भवानी...

रखना 'मधुप' कंजकां नूं याद जी ।
कंजकां तो लैनां है आर्शीवाद जी ॥
कंजकां दी बड़ी उच्ची शांन हुंदी ए -
कंजका भवानी...

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/35310/title/ghar-ghar-ashtami-di-jyot-jagi-e

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |